विकसित भारत अभियान
1947 TO 2047

MINISTRY OF EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

कला उत्सव

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

samriddhi

Samriddhi 2024-25 : Guidelines

समृद्धि 2024-25 : दिशानिर्देश

samriddhi

Art Integrated Pedagogical Practices by Teachers

शिक्षकों द्वारा कला समेकित शैक्षणिक विधियाँ

SAMRIDDHI 2024 – 25 : Guidelines

समृद्धि 2024 – 25 : दिशानिर्देश

अक्तूबर 2024

आश्विन 1946

PD XXX BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2024

सचिव, प्रकाशन प्रभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग,
नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित।

विषय-सूची

1.	समृद्धि — एक परिचय	5
2.	कला समेकित शिक्षणशास्त्र की प्रमुख विशेषताएँ	8
3.	समृद्धि में भाग लेने के लिए सामान्य दिशानिर्देश	10
4.	योग्यता	12
5.	मूल्यांकन मापदंड	14
6.	शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले प्रपत्रों का विवरण	15

CONTENTS

1.	*Samriddhi* – An Introduction	17
2.	Salient Features of Art Integrated Pedagogy	20
3.	General Guidelines for Participating in *Samriddhi*	22
4.	Eligibility	24
5.	Evaluation Criteria	26
6.	Details of forms to be submitted by the teachers	27

1. समृद्धि — एक परिचय

समृद्धि शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय कला उत्सव के अंतर्गत प्रस्तावित राष्ट्रीय स्तर की एक प्रतियोगिता है। यह राष्ट्रस्तरीय कला उत्सव का विस्तार है, जिसमें शिक्षकों को अपने कला समेकित शिक्षणशास्त्र के सर्वश्रेष्ठ अभ्यास प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है। इसमें माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम क्षेत्र सम्मिलित हैं। कला उत्सव शिक्षा मंत्रालय (भूतपूर्व मानव संसाधन विकास मंत्रालय) के राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अंतर्गत 2015 में आरंभ की गई एक पहल है, जिसका उद्देश्य भारत में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभाओं को प्रोत्साहित और प्रदर्शित कर कला शिक्षा को गति प्रदान करना है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* (एन.ई.पी. 2020) तथा *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* (एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023) की अनुशंसाओं पर आधारित समृद्धि का उद्देश्य शिक्षकों द्वारा कला समेकन से प्रेरित शैक्षणिक अनुभवों को पाठ्यचर्या से जोड़ने के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना करना एवं उन्हें प्रोत्साहित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देती है और विद्यालय में शिक्षा को प्रत्येक स्तर पर आनंददायक, कला और खेल से जुड़ी, अनुभवात्मक अधिगम के साथ सम्मिलित करने की परिकल्पना करती है। "कला समेकित अधिगम एक क्रॉस करिकुलर शैक्षणिक दृष्टिकोण है जिसमें विविध विषयों की अवधारणाओं के अधिगम आधार के रूप में कला और संस्कृति के विभिन्न अवयवों का उपयोग किया जाता है। अनुभव आधारित अधिगम पर विशेष बल दिए जाने के अंतर्गत कला समेकित शिक्षण को कक्षा प्रक्रियाओं में स्थान देने से न केवल कक्षा अधिक आनंदपूर्ण बनेगी, बल्कि भारतीय कला और संस्कृति के शिक्षण में समावेश द्वारा भारतीयता से बच्चों का परिचय भी हो पायेगा। इस दृष्टिकोण से शिक्षा और संस्कृति के परस्पर संबंधों को भी मजबूती मिलेगी" (एन.ई.पी., पृ.12)।

कला समेकित शिक्षणशास्त्र एक ऐसा शिक्षण अनुभव प्रदान करता है जो विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक स्तरों से समग्रता के साथ जुड़ सके। इससे कुछ भी सीखना 'संपूर्ण', 'आनंदमय' और 'अनुभवात्मक' हो जाता है। कला के साथ जुड़ते समय विद्यार्थी विभिन्न चरणों से गुजरते हैं, जैसे – अवलोकन, विचार, कल्पना, अन्वेषण, प्रयोग, निष्कर्ष, निर्माण, पुनर्निर्माण और अंततः अभिव्यक्ति। कला समेकित शिक्षणशास्त्र शिक्षण को सरलीकरण प्रक्रिया के रूप में और सीखने को अनुभवात्मक रूप में देखता है। यह विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा देता है, जहाँ विद्यार्थी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का केंद्र बन जाता है। एन.ई.पी. 2020 में कहा गया है, "यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि बच्चे केवल सीखें ही नहीं, बल्कि और भी महत्वपूर्ण है कि वे सीखने के लिए सीखें। इस प्रकार शिक्षा को सामग्री की अपेक्षा सोचने की क्षमता और समस्याओं को हल करने के बारे में सीखने की ओर बढ़ना चाहिए" (एन.ई.पी., पृ.3)।

सांस्कृतिक और कला शिक्षा के लिए यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन) की रूपरेखा (संस्कृति और कला शिक्षा पर विश्व सम्मेलन, अबू धाबी, 2024) के अनुसार कला समेकन एक वैश्विक दृष्टिकोण है। कला समेकित शिक्षणशास्त्र परिवर्तनकारी शिक्षा को बढ़ावा देता है तथा विद्यार्थियों को प्रेरित करता है कि वे विश्व को

अधिक शांतिपूर्ण तथा संधारणीय बनाने की ओर अग्रसर हों। उनकी इस क्षमता को संपूर्ण रूप से परिपोषित एवं प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक है कि उनके शिक्षक कक्षा में होने वाले शैक्षणिक अनुभवों को सजगता एवं सावधानी से सृजित एवं कार्यान्वित करें, जिससे विद्यार्थियों को अधिकतम लाभ प्राप्त हो।

इस वर्ष कला उत्सव के अंतर्गत कला समेकित शिक्षणशास्त्र की प्रक्रियाओं को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के एक अलग वर्ग — समृद्धि के रूप में जोड़ा गया है, जिसका उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर कला समेकित शिक्षणशास्त्र को प्रोत्साहित करना और लोकप्रिय बनाना है। यह कार्यक्रम पूरे देश के शिक्षकों द्वारा कला समेकित शिक्षणशास्त्र की प्रक्रियाओं को प्रदर्शित करने का एक मंच है। समृद्धि की प्रतियोगिताएँ सभी स्तरों (जिला स्तर से राज्य/क्षेत्रीय स्तर) पर आयोजित की जाएँगी और वहाँ से सर्वोत्तम प्रविष्टि राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभागिता करेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की कई प्रमुख अनुशंसाओं के साथ सामांजस्य स्थापित करते हुए समृद्धि का उद्देश्य शिक्षकों की रचनात्मकता और कला समेकन के साथ नवोन्मेषी शिक्षण विधियों को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करना है, जो समग्र और व्यापक शिक्षा को बढ़ावा देने मे इसके महत्व को दर्शाता है।

2. कला समेकित शिक्षणशास्त्र की प्रमुख विशेषताएँ

- आयोजित गतिविधियों का विशिष्ट विषयों/उप-विषयों के अधिगम प्रतिफलों से सीधा संबंध होना चाहिए।
- अंतरविषयक दृष्टिकोण के विषय में जागरूकता ताकि एक अनुभव को दूसरे अनुभव से एकीकृत किया जा सके।
- आलोचनात्मक चिंतन और 21वीं सदी के कौशलों का एकीकरण।
- कला समेकित शिक्षण के अनिवार्य हिस्से के रूप में देशज कला-शिल्प, खिलौनों और स्थानीय संसाधनों पर बल (भारतीय ज्ञान परंपरा में सन्निहित)।
- रचनात्मक शैक्षणिक अनुप्रयोगों के लिए शिक्षक टीमें बनाकर अपनी कक्षाओं को मिला सकते हैं।
- विद्यार्थियों के लिए आनंदपूर्ण अधिगम तथा आलोचनात्मक चिंतन का विकास।
- 'परिणाम' की अपेक्षा कला शिक्षा की 'प्रक्रिया' पर विशेष बल।

- किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना समावेशी शिक्षण का वातावरण बनाया जाना चाहिए।
- गतिविधियाँ ऐसी हों, जो स्थानीय संसाधनों के उपयोग को बढ़ावा दें।
- विद्यार्थियों के लिए अधिगम उददे्श्यों की पूर्ति, जिसमें सिखाए जा रहे विषय या अवधारणा और समेकित कला रूप दोनों सम्मिलित हों।
- शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण की अवधारणाओं पर आधारित समृद्धि शिक्षार्थी के शारीरिक, सामाजिक, नैतिक, संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक विकास में शिक्षकों की प्रभावी भूमिका के महत्व पर प्रकाश डालता है।

3. समृद्धि में भाग लेने के लिए सामान्य दिशानिर्देश

- हर राज्य/संघ राज्य क्षेत्र/केंद्रीय विद्यालय संगठन/नवोदय विद्यालय समिति/ एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय से केवल एक प्रविष्टि मान्य होगी।
- प्रविष्टि के लिए दो शिक्षकों की एक टीम बनायी जा सकती है जिसमें मुख्य प्रविष्टि माध्यमिक कक्षाओं 9–12 में कला के अतिरिक्त कोई विषय पढ़ाने वाले विषय शिक्षक की होगी और दूसरा शिक्षक (वैकल्पिक) उस विद्यालय का नियमित दृश्य कला/संगीत/नृत्य/नाट्य शिक्षक हो सकता है, जो इस कार्यक्रम में भाग लेगा।
- शिक्षकों को एक परियोजना प्रस्ताव पहले ही राष्ट्रीय समन्वयक, कला उत्सव को प्रेषित करना होगा, जो कक्षा 9 से 12 के किसी भी विषय-क्षेत्र (विज्ञान, मानविकी, भाषा, गणित आदि) पर आधारित होगा और जिसे किसी प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्ति साथ मिलाया गया हो।
- परियोजना प्रस्ताव उनकी कला गतिविधि पर आधारित होगा, जिसे संबंधित विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा प्रमाणित किया जाएगा।
- प्रस्तुति के लिए किसी भी कला रूप (दृश्य कला/संगीत/नृत्य/नाट्य) को एकीकृत

किया जा सकता है।

- आई.सी.टी. के प्रयोग की भी अनुमति होगी।
- प्रस्तुति का परियोजना प्रस्ताव 500 शब्दों (फॉन्ट – कोकिला, फॉन्ट आकार – 16) से अधिक नहीं होना चाहिए। इस प्रस्ताव में प्रस्तुति की प्रक्रिया और महत्वपूर्ण विशेषताओं का स्पष्ट उल्लेख करते हुए कला गतिविधि के चित्रों (जे.पी.जी. प्रारूप) या वीडियो (एम.पी.4 प्रारूप) के लिंक भी संलग्न किये जाने चाहिए।
- परियोजना प्रस्ताव और उसका प्रस्तुतीकरण हिंदी या अंग्रेजी में किया जाएगा।
- सभी शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.), जो उपयोग की जाएगी, उसे योजना/प्रस्ताव में उल्लेखित किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों की सहभागिता को भी स्पष्ट रूप से वर्णित किया जाना चाहिए।
- प्रस्तुति के लिए आवंटित समय 20 मिनट है और निर्णायक मंडल के साथ बातचीत के लिए 5 मिनट दिए जाएँगे। (कुल – 25 मिनट)
- परियोजना प्रस्ताव को नोडल अधिकारी द्वारा प्रमाणित प्रविष्टियों के बाद साझा किया जाएगा और राष्ट्रीय समन्वयक, कला उत्सव के साथ कम से कम 15 दिन पहले साझा किया जाएगा।
- सभी महत्वपूर्ण दिशानिर्देश, परिपत्र, प्रपत्र कला उत्सव की आधिकारिक वेबसाइट **kalautsav.ncert.gov.in** पर अपलोड किए जाएँगे। कृपया वेबसाइट को नियमित रूप से देखते रहें।

4. योग्यता

- कक्षा 9, 10, 11 और 12 के किसी भी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के शिक्षक जो किसी भी राज्य या केंद्रीय बोर्ड से जुड़े हैं, वे समृद्धि — कला समेकित अधिगम (2024-25) में भाग ले सकते हैं।
- राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के स्कूलों के साथ ही राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में स्थित अन्य केंद्रीय सरकार संगठनों/स्थानीय निकायों, जैसे केंद्रीय तिब्बती स्कूल प्रशासन (सी.टी.एस.ए.), बहुद्देशीय प्रायोगिक विद्यालय (डी.एम.एस.), रा.शै.अं.प्र.प., रेलवे, बी.एस.एफ., सी.आर.पी.एफ., परमाणु ऊर्जा आयोग, सेना, वायु सेना, कैंटोनमेंट बोर्ड, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् (एन.डी.एम.सी.), कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी.) आदि के स्कूल जिला और राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे।
- केंद्रीय विद्यालय संगठन/नवोदय विद्यालय समिति/एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय अपने-अपने स्कूलों में प्रतियोगिताएँ आयोजित करेंगे और उनकी विजयी

टीमें राष्ट्रीय स्तर पर तीन अलग-अलग टीमों के रूप में भाग लेंगी। इस प्रकार, राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेने वाली कुल टीमें 39 होंगी।

[36 राज्य/संघ राज्य क्षेत्र + केंद्रीय विद्यालय संगठन + नवोदय विद्यालय समिति + एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय]

- प्रतिभागी शिक्षकों को न्यूनतम 2 वर्षों का शैक्षणिक अनुभव होना चाहिए।

नोट

- सभी नोडल अधिकारियों को सुनिश्चित करना होगा कि सभी स्कूल जिला और राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लें ताकि सक्षम और रचनात्मक शिक्षकों का चयन हो सके। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षकों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो।
- पुरस्कार राशि सीधे विजेताओं के खातों में स्थानांतरित की जाएगी और राज्य/संघ राज्य/केंद्रीय विद्यालय संगठन/नवोदय विद्यालय समिति/एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय को नहीं दी जाएगी ताकि इसका समय पर वितरण सुनिश्चित हो सके।

5. मूल्यांकन मापदंड— कला समेकित शिक्षणशास्त्र की प्रतियोगिता

सामग्री/विषय (5) कला और शिल्प के संदर्भ में योजना की उपयुक्तता (15)	शिक्षणशास्त्र की प्रासंगिकता (पर्यावरण/ संस्कृति/स्थानीय कला और शिल्प से जुड़ाव)	विद्यार्थियों की कला अनुभव में सहभागिता	प्रक्रियाएँ	प्रस्तुति कौशल	कुल अंक
20	20	20	20	20	20

पुरस्कार राशि

प्रथम पुरस्कार	₹ 25000
द्वितीय पुरस्कार	₹ 20000
तृतीय पुरस्कार	₹ 15000

- प्रत्येक पुरस्कार राशि को टीम सदस्यों में समान रूप से बाँटा जाएगा।
- पुरस्कार राशि सीधे पुरस्कृत शिक्षकों के खातों में स्थानांतरित की जाएगी।

6. शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले प्रपत्रों का विवरण

प्रपत्र – अ

विवरण	विषय शिक्षक	कला शिक्षक
नाम (बड़े अक्षरों में)		
पासपोर्ट आकार का फोटो		
जन्म तिथि		
स्थायी पता		
आधार नंबर		
ईमेल		
मोबाइल नंबर		
पदनाम		
पढ़ाए जा रहे विषय और कक्षाएँ		
विद्यालय का नाम और पता		
विद्यालय का UDISE कोड		
नियुक्ति की तारीख		
वर्तमान भूमिका में अनुभव		
श्रेणी (यदि लागू हो): एस.सी./एस.टी./ओ.बी.सी.		
दिव्यांग (हाँ/नहीं)		
बैंक विवरण		
PAN नंबर		
बैंक का नाम		
खाता नंबर		
IFSC कोड		

समृद्धि हेतु अवधारणा नोट का प्रारूप

कृपया प्रस्तुति का प्रस्ताव लेख संलग्न करें, जिसमें प्रस्तुति की प्रक्रिया और महत्वपूर्ण विशेषताओं को स्पष्ट किया गया हो।

(फॉन्ट – कोकिला, फॉन्ट आकार – 16, शब्द सीमा – 500 अधिकतम)

गतिविधि का विवरण

प्रपत्र – ब

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले शिक्षक निम्नलिखित प्रारूप में गतिविधि का विवरण भरें।

विवरण	विषय शिक्षक	कला शिक्षक
विषय		
क्षेत्र/विषय		
पाठ्यचर्या लक्ष्य		
दक्षताओं का मानचित्रण		
सीखने के प्रतिफल		
अवधारणा की समझ हेतु कलाओं के विभिन्न घटकों का उपयोग		
प्रक्रियाएँ एवं कार्यनीतियाँ (500 शब्दों में लेख और अधिकतम 5 स्पष्ट तस्वीरें संलग्न करें)		
प्रयुक्त संसाधन		
आकलन		
अनुवर्ती गतिविधि		
समीक्षा		

1. *Samriddhi* – An Introduction

Samriddhi is a national level competition for the teachers as an extension program of the National Level *Kala Utsav*, to showcase their best art integrated pedagogical practices incorporating the curricular areas of Secondary level (IX to XII). Kala Utsav, an initiative under *Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan* (RMSA) was launched in 2015 by the Ministry of Human Resource Development (MHRD), now the Ministry of Education (MoE) to promote arts in education by nurturing and showcasing the artistic talents of secondary school students in India. Guided by the recommendations of the National Education Policy (NEP– 2020) and the National Curriculum Framework (NCF–2023), *Samriddhi* aims to acknowledge and encourage the contribution of teachers towards integrating art driven learning experiences to curricular learning.

The National Education Policy (NEP–2020) gives more importance to promotion of Indian Art and Culture and envisages

the school education embedded with joyful, art and sports integrated, experiential learning at all stages. "Art integration is a cross-curricular pedagogical approach that utilises various aspects and forms of art and culture as the basis for learning of concepts across subjects. As a part of the thrust on experiential learning, art integrated education will be embedded in classroom transactions not only for creating joyful classrooms, but also for imbibing the Indian ethos through integration of Indian art and culture in the teaching and learning process at every level. This art integrated approach will strengthen the linkages between education and culture" (NEP, p.12).

Art integrated pedagogy provides a learning experience that engages the learners mind, heart and body making learning 'holistic', 'joyful' and 'experiential'. While engaging with arts, the learner goes through different stages, such as: observing, thinking, imagining, exploring, experimenting, deducing, creating, re-creating and finally, expressing. Art integrated pedagogy looks at teaching as a facilitating process and learning as experiential. It promotes student or learner– centred education, where the learner becomes the focus of the teaching-learning. NEP-2020 states that "it is becoming increasingly critical that children not only learn, but more importantly learn how to learn. Education thus, must move towards less content and more towards learning about how to think critically and solve problems" (NEP, p.3).

Art integration has a universal approach. As United Nations Educational, Scientific and Cultural Organisation (UNESCO) Framework for Culture and Arts Education (World Conference on Culture and Arts Education, Abu Dhabi, 2024) also states that, "Art integrated pedagogy fuels transformative education that helps increase students capacity and motivation to build a more peaceful and sustainable world. However, to fully realise this potential, teachers must mindfully structure and support educational experiences to optimise what students will take away from it."

Thus, Art integrated pedagogical practices has been added as a separate category of national level competitions for teachers under the aegis of *Kala Utsav— Samriddhi.* This initiative aims towards

encouraging and implementing art integrated pedagogy at secondary stage. It is a platform for providing avenues of showcasing the art integrated pedagogical practices by teachers from all over the country. The competitions of *Samriddhi*, will be held at all levels of school education, district level to state or regional level and the best entry selected from there will participate at the national level.

To align with several key recommendations of the NEP-2020, reflecting its significance in promoting holistic and comprehensive education, *Samriddhi* aims to provide a platform to showcase teachers creativity and ingenuity in innovative pedagogies with art integration.

2. Salient features of Art Integrated Pedagogy

- Activities planned and conducted should have a direct link with the learning.
- Interdisciplinary approach in a way that one experience can be integrated with other experience.
- Critical thinking and integration of 21st century skills.
- Integration of indigenous crafts or arts, toys and local resources in pedagogy to transact curriculum (embedded in IKS).
- Teachers or facilitators can plan to club their classes by forming teams to enable creative pedagogic applications.
- Engaging students joyfully and enhancement of critical thinking.
- Focus on arts as a process than the product.
- Create an environment of inclusive learning.

- Activities should promote use of local resources.
- Achievement of learning objectives for the student both in the art form being integrated and the subject or concept being taught.

Rooted in the concepts of learner-centered teaching, *Samriddhi* underlines the importance of the teachers role in effectively enhancing all the three domains of learning of the student or learner, i.e., cognitive, socio-emotional and psychomotor.

3. General Guidelines for Participating in *Samriddhi*

- There will be only one entry from each of the States/UT/ KVS/NVS/EMRS.
- A team of two teachers may participate. The main entry will be by a subject teacher, teaching in secondary Class IX–XII and another teacher (optional) can be the regular Visual Art, Music, Dance, Theatre teacher of the respective school, who will participate in this event.
- They will have to submit a project proposal of lesson in advance, which will be based on any of the subject areas of any stream offered in Class IX–XII (Science, Humanities, Languages, Mathematics etc.) finely amalgamated with the aesthetics of artistic expression of any fine art forms.
- The project proposal will be based on their classroom practice, duly certified by the principal of the respective school.

- Any form of Art (Visual Art, Music, Dance or Theatre) can be integrated to present the demonstration.
- Use of Information and Communications Technology (ICT) will also be allowed.
- The project proposal presentation should be a write-up of not more than 500 words (Font– Times New Roman, font size – 12), highlighting the process and the salient features of the respective presentation, supported by photographs (JPG format) or video (mp4 format) links, etc., of the classroom practice.
- The medium of language of the project proposal and presentation should be either hindi or english.
- All Teaching Learning Materials (TLM) which will be used must be mentioned in the plan or proposal.
- Level of students engagement should also be clearly stated.
- Time duration allocated for the presentation is 20 minutes and 5 minutes will be given for the interaction with jury. (Total– 25 minutes)
- The project proposal will be shared by the Nodal Officer after certifying the entries and will be shared with the National Coordinator, *Kala Utsav* at least 15 days before the competitions.
- All important guidelines, circulars, forms will be uploaded on the official website of *Kala Utsav*– **kalautsav.ncert.gov.in**. Kindly check the website regularly.

4. Eligibility

- Teachers of Class IX, X, XI and XII of any Government, Government-aided and Private school affiliated to any State or Central Boards, can participate in *Samriddhi* (2024–25).
- Schools of other central government organisations or local bodies, such as Central Tibetan School Administration (CTSA), Demonstration Multipurpose Schools (DMS) NCERT, Railways, BSF, CRPF, Atomic Energy Commission, Army, Air Force, Cantonment Boards, NDMC, KGBV, etc., located in the State or Union Territory can participate at the District and State level competitions, along with the other schools of the States or UTs.
- The KVS, NVS, EMRS will hold competitions within their own schools in respective organisations and their winning teams will participate as three separate teams at the National

Level. Thus, total teams participating in the National Level will be 39 (36 States/UTs + KVS + NVS + EMRS).

- Participating teachers should have minimum two years of experience in their respective institution.

Note

- All the Nodal Officers have to ensure that all schools participate in the District and State level competitions to enable selection of the competent and creative teachers. Adequate representation of rural segments with a special emphasis on participation of teachers from remote areas should be ensured.
- All teams have to note that the prize money will be transferred directly into the winners accounts and not given to the State, UT, NVS, KVS or EMRS to ensure its timely distribution.

5. Evaluation Criteria — Teachers Competition of Art Integrated Pedagogy

Content/ Theme (5) Appropriateness of the plan in regard with arts and crafts as a pedagogy (15)	Relevance of the pedagogy (rootedness to environment/ culture/ local arts and crafts)	Students Engagement in Art Experience	Processes	Presentation Skill	Total Marks
20	20	20	20	20	20

Prize Money for Teams

First Prize	₹ 25,000
Second Prize	₹ 20,000
Third Prize	₹ 15,000

- The prize money for each position will be equally divided into two team members.
- The prize money for each position will be directly transferred into the accounts of position holding teachers.

6. Details of Forms to be Submitted by the Teachers

FORM – A

Details	Subject Teacher	Art Teacher
Name (Capital Letters)		
Passport size photo		
Date of birth		
Residential address		
Aadhar no.		
Email no.		
Mobile no.		
Designation		
Subjects and classes taught		
Name of the school & address		
UDISE code of school		
Date of joining		
Number of years of experience in the current role		
Category (if applicable): SC/ST/OBC		
Physically challenged (YES/NO)		
Bank Details		
PAN no:		
Name of Bank:		
Account no:		
IFSC code:		

Format of the Proposal for Art Integrated Pedagogy Project Plan

Kindly attach the write-up of the proposal of the project plan presentation along with the proforma, highlighting the process and the salient features of the respective presentation. Font — Times New Roman, Font size — 12, Word count — 500 max.

FORM – B

Teacher participants of this competition should fill up the details of the activity in the following format.

Details	Subject Teacher	Art Teacher
Subject		
Area / Theme		
Curricular goals		
Mapping of competencies		
Learning outcomes		
Use of different components of arts for the comprehension of the concept		
Processes and strategies (write-up in 500 words and max 5 photographs with good clarity to be attached)		
Resources used		
Assessment		
Follow-up Activity		
Reflection		

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING